01-03-2021

एक अद्भुत जीवन कहानी

श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित है कि **'मूढ़मति लोग साधारण तन में आए मुझ परमपिता परमात्मा को नहीं पहचान पाते।'** पहचाने भी कैसे? क्योंकि 5000 वर्ष के इस विशाल सृष्टि रूपी नाटक में 84 जन्म लेते-2 सभी मनुष्य-आत्माएँ पतित व विकारी बन चुकी हैं, मिट्टी के समान शरीर में मन-बुद्धि को लगाते-2 पत्थरबुद्धि बन गई हैं, मूर्छित हो गई हैं। गीता में वर्णित है कि **'अपने विश्व रूप का दर्शन कराने के लिए भगवान ने अर्जुन को दिव्य चक्षु प्रदान किए।'** यह सिर्फ एक अर्जुन की बात नहीं है और न ही भगवान ने किसी रथ पर बैठकर सिर्फ अर्जुन को संस्कृत में गीता के 18 अध्याय सुनाए थे। वास्तव में **निराकार परमपिता शिव** किसी मनुष्य शरीर रूपी रथ में बैठकर सभी पुरुषार्थ का अर्जन करने वाले अर्जुन रूपी आत्माओं को सृष्टि के आदि, मध्य और अंत का रहस्य समझाते हैं। वे हम सब आत्माओं के पिता हैं। उनके ज्ञान व अविनाशी सुख-शान्ति के वर्से पर हम सबका हक है। यह वर्सा हमें देने के लिए वे स्वयं इस धरती पर पधार चुके हैं और साधारण मनुष्य शरीर रूपी रथ में बैठकर ईश्वरीय ज्ञान व राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं।

उनका यह कार्य **सन् 1936-37 में पाकिस्तान** के **सिंध हैदराबाद** शहर से प्रारम्भ हुआ, जब उन्होंने **'दादा लेखराज'** नामक एक विख्यात हीरों के व्यापारी को विष्णु चतुर्भुज, नर्क की पुरानी दुनिया के विनाश और स्वर्ग की नई दुनिया की स्थापना का साक्षात्कार कराया; किन्तु दादा लेखराज उन दिव्य साक्षात्कारों का अर्थ समझ न पाए। उन्होंने अपने गुरुओं से इसका अर्थ पूछा; किन्तु भगवान की लीला वे क्या समझें? उन्होंने दादा लेखराज को वाराणसी के प्रकाण्ड पण्डितों से इसका समाधान पाने की सलाह दी; किंतु उन्हें वहाँ भी निराशा ही हाथ लगी। वहाँ भी उन्हें साक्षात्कार होते रहे जिसकी तस्वीरें वे गंगा के घाटों पर बनी दीवारों पर बनाते रहते थे। जब कोई भी उनकी समस्या का समाधान न कर सका तो उन्हें अपने **कलकत्ता** निवासी **भागीदार** की याद आई। उसकी निष्ठा, ईमानदारी और होशियारी से प्रभावित होकर ही उन्होंने उसे अपनी कलकत्ता स्थित हीरों की दुकान की ज़िम्मेवारी सौंपी थी। अतः दादा लेखराज कलकत्ता गए; किंतु सीधे उस भागीदार को अपने साक्षात्कारों का वर्णन करने के बजाय उन्होंने अपनी नज़दीकी संबंध की माता (छोटी माता) को सुनाया और छोटी माता ने दूसरी माता को सुनाया जो बोलने, सुनने, सुनाने में सिद्धहस्त थी। बाद में जब सुनने-सुनाने में सिद्धहस्त माता ने प्रजापिता (भागीदार) को सुनाया उसी समय ज्योतिर्बिंदु परमपिता परमात्मा शिव ने उसी माता और प्रजापिता (भागीदार) में साथ ही साथ प्रवेश कर लिया और इस प्रकार उस सिद्धहस्त माता द्वारा साक्षात्कारों का वर्णन **सुनने-सुनाने** की प्रक्रिया द्वारा **भक्तिमार्ग** की तथा भागीदार द्वारा सा. का रहस्य **समझने-समझाने** की प्रक्रिया द्वारा **ज्ञानमार्ग** की नींव पड़ गई।

भगवान द्वारा साकार रूप में स्थापित यह परिवार कलकत्ते से सिंध हैदराबाद और फिर **कराची** में स्थानान्तरित हुआ, जहाँ कुछ वर्ष तक शिव का साकार माध्यम बनने के बाद भागीदार तथा उन दोनों माताओं का देहावसान हो गया और धरती पर ईश्वरीय कार्य की सारी ज़िम्मेवारी दादा लेखराज के कंधों पर आ पड़ी, जिन्होंने भगवान का परिचय पाते ही अपना तन, मन और धन उन पर न्यौछावर कर दिया था। अतः परमपिता शिव ने विश्व-परिवर्तन का कार्य दादा लेखराज (जिनका कर्तव्यवाचक नाम **'ब्रह्मा'** है) के शरीर के द्वारा जारी रखा। इस बीच यह ईश्वरीय परिवार जो पहले **'ओम मंडली'** कहलाता था, देश के विभाजन के पश्चात् राजस्थान स्थित **माउंट आबू** में स्थानान्तरित होने पर **'ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय'** कहलाने लगा। यहाँ से भगवान द्वारा सिखलाए गए ज्ञान व राजयोग की शिक्षा का देश-विदेश में प्रचार होने लगा। दादा लेखराज उर्फ ब्रह्मा के द्वारा परमपिता परमात्मा शिव ने आत्मा, परमात्मा व सृष्टि के आदि, मध्य व अन्त का **प्रारम्भिक या**

बेसिक ज्ञान दिया। माउण्ट आबू में परमपिता शिव का यह ईश्वरीय कार्य चल ही रहा था; किंतु 18 जनवरी, सन् 1969 में अचानक दादा लेखराज उर्फ ब्रह्मा का देहावसान हो गया; किंतु भगवान का विश्व-परिवर्तन का बेहद का कार्य तो रुक नहीं सकता। अतः ज्योतिर्बिन्दु शिव ने सन् 1969 में ही उक्त भागीदार के अगले जन्म वाले मुकर्रर शरीर रूपी रथ (जिनका कर्तव्यवाचक नाम सन् 1976 से **'शंकर'** प्रसिद्ध होता है) में प्रवेश किया।

फर्रुखाबाद जिले का जीर्ण-शीर्ण अति प्राचीन **कम्पिला** ग्राम आज मानवता के मस्तिष्क पटल से धूमिल हो चुका है। इसे टाउन का दर्जा मिलने के बाद अब तक भी गाँव के चारों तरफ गंदगी ही गंदगी भरी पड़ी रहती है। गलियों में बदबूदार नालियाँ आम बात है। एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल होने के बावजूद भी कोई खास विकास यहाँ नहीं हो पाया है। पुरातात्विक विभाग वालों ने इस ग्राम के आस-पास खुदाई करवाकर पुरातात्विक अवशेष प्राप्त किए हैं। यह ग्राम वास्तव में ऐतिहासिक व पौराणिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। महाभारत पुराण के हिसाब से यह ग्राम पांचाल देश की राजधानी थी। यहाँ ही पांचाल नरेश 'द्रुपद' की पुत्री 'द्रौपदी' का जन्म हुआ माना जाता है। जिस ज्ञान यज्ञ कुण्ड से द्रौपदी का जन्म हुआ था उसकी यादगार आज यहाँ वह द्रौपदी कुंड बना हुआ है। यज्ञ कुण्ड के समीप ही टीले पर एक आश्रम है जो कपिल मुनि की तपस्या स्थली है। इस कम्पिला ग्राम में ही जैनियों के दो प्रसिद्ध तीर्थ स्थल अर्थात् तेरहवें तीर्थंकर श्री विमलनाथस्वामी का दिगम्बर जैन मंदिर तथा श्वेताम्बर जैन मंदिर भी स्थित है। इनके अलावा भी यहाँ कई पुराने मंदिर हैं, जो इसके ऐतिहासिक व धार्मिक महत्व को सिद्ध करते हैं। शायद इसलिए परमपिता परमात्मा शिव ने भी विश्व-परिवर्तन के अपने गुप्त कार्य के लिए इस कम्पिला ग्राम को ही चुना है। माउंट आबू से ब्रह्मा के द्वारा चलाई गईं वाणियों के सिद्धांतों के अनुसार पौराणिक युग की पुनरावृत्ति हो रही है अर्थात् पांडवों का लम्बे समय का गुप्तवास अभी फिर चल रहा है। इन रहस्यों को मात्र वही लोग समझ सकते हैं जिन्होंने आध्यात्मिक परिवार के विभिन्न मिनी-मधुबनों और गीता-पाठशालाओं या गीता-मंदिरों में आकर 7 दिन का निःशुल्क प्रशिक्षण लेकर रोज़ाना ज्ञान प्राप्त किया है और गहराई से अध्ययन के साथ-2 रिसर्च भी किया है। कम्पिला एक ऐसी पवित्र धर्म स्थली है जो फिलहाल जराजीर्ण अवस्था में है; किंतु वह फिर से संसार के सामने रोशन होने वाली है। **माउण्ट आबू में दादा लेखराज ब्रह्मा द्वारा चलाई गई शिवबाबा की वाणियों अर्थात् ज्ञान मुरलियों के अनुसार कम्पिला गाँव में वर्तमान युग को परिवर्तन करने वाले एक ऐसे दिव्य महापुरुष का आविर्भाव हुआ है जिनके तन में परमप्रिय पतित-पावन परमपिता शिव परमात्मा अवतरित होकर सतयुग की स्थापना का कार्य कर रहे हैं।** ऐसी मान्यता बहुत से ब्रह्माकुमार-कुमारियों की बन चुकी है। उक्त वाणियों में इनके पूर्व जन्मों के वृत्तान्तों का उल्लेख भी पाया गया है और इनके वर्तमान जीवन का भी विशेष उल्लेख है। सन् 1969 में दादा लेखराज ब्रह्मा के देहावसान से अब तक ब्रह्मा की आत्मा द्वारा माउण्ट आबू में गुलज़ार दादीजी के तन द्वारा सुनाई जा रही अव्यक्त-वाणियों में भी इस बात के प्रमाण मिलते हैं। लगभग 600-700 करोड़ की आबादी वाले विश्व को ऐसे महापुरुष की पहचान होना भी ज़रूरी है और समय पर होना ही है।

कम्पिला निवासी **बाबा वीरेन्द्र देव दीक्षित जी का** जन्म एक गरीब किसान ब्राह्मण परिवार **में प्रथम फरवरी, सन् 1942 को फर्रुखाबाद** जिले (उत्तर प्रदेश) के कायमगंज से उत्तर दिशा की ओर लगभग 4 किलोमीटर दूरी पर स्थित **अहमदगंज** नामक गाँव में हुआ था। उनकी माता का नाम लीलावती और पिता का नाम श्री सोहनलाल शिव दयाल दीक्षित था। श्री सोहनलाल जी अपना अहमदगंज गाँव छोड़कर अपने ही ननिहाल कम्पिला गाँव में स्थायी रूप से रहने लगे। अतः बाबा दीक्षित जी का पालन-पोषण पौराणिक एवम् ऐतिहासिक नगरी कम्पिला में ही माता-पिता के संरक्षण में होने लगा। उधर हाईस्कूल की शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने कम्पिला थाने में इंचार्ज रह चुके सिद्दीकी दरोगा के निजी घर (हमीरपुर जिले) से इंटर की शिक्षा पूरी की। अपना इकलौता पुत्र होने के कारण उनके पिताजी उनपर शादी के लिए दबाव डाला करते थे, जो कि

बाबा पसंद नहीं करते थे। इस कारण वे अपने पिताजी से क्षुब्ध रहते थे। अतः पिताजी ने कह दिया कि यदि घर में रहना है तो शादी भी करनी है, नहीं तो जहाँ चाहो वहाँ चले जाओ। तो दबाववश वे घर से निकल पड़े। उनकी एक छोटी बहन भी है जो कि उनके पिताजी के संरक्षण में रहने लगी; क्योंकि बाबा की माताजी का देहान्त सन् 1965 में हो गया था। उस समय बाबा की उम्र 23 वर्ष के लगभग रही। फिर एटा में जे.टी.सी. की ट्रेनिंग पूरी करने के बाद कम्पिला परिषदी प्राइमरी विद्यालय में उन्होंने बच्चों को पढ़ाने का काम 3 वर्ष तक किया, फिर वहाँ से निकलकर कायमगंज बालिका विद्यालय में भी 2 वर्ष तक पढ़ाते रहे। उसके बाद वहाँ से निकलकर पी.एच.डी. रिसर्च वर्क के लिए अहमदाबाद (गुजरात) रवाना हो गए।

बाबा के अलौकिक जीवन की घटनाएँ

1. पी.एच.डी. रिसर्च वर्क के दौरान ब्रह्माकुमारियों से सम्पर्क और संघर्ष

बाबा दीक्षित जी ने सन् 1969 में गुजरात यूनिवर्सिटी के हॉस्टल (अहमदाबाद) में रहकर 'सृष्टि का आदि पुरुष कौन?'- इस विषय पर अनुसंधान (पी.एच.डी) का काम शुरू किया। चार-छः मास व्यतीत होने के पश्चात् रिसर्च वर्क के दौरान 30 नवम्बर, 1969 को पहली बार (राजस्थान में माउंट आबू स्थित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के संचालक दादा लेखराज ब्रह्मा के 18 जनवरी, सन् 1969 ई. में देहान्त होने के बाद) बाबा वीरेंद्र देव दीक्षित ने ब्रह्माकुमारी संस्था के 2B, प्रभु पार्क, अहमदाबाद स्थित **पालड़ी सेवाकेंद्र** में प्रवेश किया। वहाँ पर **ब्रह्माकुमारी वेदांती बहन** ने इन्हें अटैण्ड किया। वह बहन कुछ सुनाती थी तो उन बातों का बाबा विरोध करते जाते थे; क्योंकि वे रिसर्च माइण्डेड होने के कारण शास्त्रों के आधार पर हर बात को मानते रहे, इसलिए वे उनकी बातों को कट करते रहे। इस प्रकार लगातार तीन-चार दिन बीत गए; लेकिन कोई बात हल नहीं हो पाई। वेदांती बहन तो होशियार थी। उन्होंने वहाँ के बड़े-2 बुजुर्ग ब्रह्माकुमार भाइयों को बुलाकर बाबा के आस-पास बैठा दिया। फिर वे बुजुर्ग भाई लोग उनको समझाने लगे कि आप पहले यहाँ सात दिन कोर्स तो सुन लीजिए। यह बात सुनते ही बाबा ने कहा कि फिर तो हम प्रश्न करना ही भूल जाएँगे। फिर भी बाबा ने उन सबकी बात मान ली और कहा कि आप हमें सुनाते जाइए हम नोट करते जाएँगे।

अतः कोर्स के दौरान सातवें दिन उन्हें अटैण्ड करने वाली वह बहन कहीं चली गई तो बाबा दीक्षित जी उस केंद्र की संचालिका ब्रह्माकुमारी सरला बहन से मिले और उनके साथ डिस्कशन करने से कुछ प्रश्नों का समाधान भी प्राप्त हुआ; फिर भी वह संचालिका बहन इन्हें पूरी तरह संतुष्ट नहीं कर पाई। बाद में उन्होंने बाबा से कहा कि अगले दिन कलकत्ते से ब्र.कु. रमेश भाई आने वाले हैं, आप उनसे अपने प्रश्नों का समाधान ले लीजिए; क्योंकि सरला बहन को अंदर ही अंदर यह लगने लगा कि हम इनको सन्तुष्ट नहीं कर पा रहे हैं। दूसरे दिन रमेश भाई आए और जब वे बाबा से मिले तो उन्होंने बाबा से एक ही प्रश्न पूछा कि आपको परमपिता परमात्मा शिव का जो रूप यहाँ बतलाया गया है वह पसंद आया? उसकी स्मृति आपको पसंद है? तो बाबा ने जवाब दिया कि हाँ, यह बात हमको अच्छी लगी है कि परमपिता परमात्मा शिव ज्योतिर्बिन्दु है, उसको याद करने से हमारी मन-बुद्धि रूपी ज्योतिर्बिंदु आत्मा सूक्ष्म स्टेज धारण करेगी। सूक्ष्म को याद करेंगे तो बुद्धि सूक्ष्म बनेगी। जब बाबा ने याद की प्रक्रिया अच्छी बताई तो रमेश भाई ने बताया कि जब आपको याद की प्रक्रिया अच्छी लग रही है तो आप कुछ दिनों तक यह अभ्यास करिए। अभ्यास करने के बाद आपको स्वतः ही सब प्रश्नों का समाधान मिल जाएगा। बाद में वेदांती बहन ने यह बात भी कही कि आप इसके साथ-2 शिवबाबा की वाणियाँ भी पढ़ते रहिए। बाबा ने उनकी दोनों बातें स्वीकार कर लीं।

थोड़े दिन बाद दीक्षित जी ने शास्त्रों का हवाला देते हुए कहा कि माउण्ट आबू में दादा लेखराज ब्रह्मा के मुख द्वारा शिवबाबा ने जो कुछ सुनाया वह बिल्कुल शास्त्रों के अनुकूल है। बाबा दीक्षित जी ने गीता की एक संक्षिप्त टीका भी लिखी है,

जो ब्रह्मा बाबा की माउंट आबू से चलाई गई मुरलियों के अनुकूल है। गीता में यह बतलाया है **'भ्रूवोर्मध्ये प्राणम् आवेश्यसम्यक्'** अर्थात् जब मनुष्य शरीर छोड़ने लगे तो वे भृकुटि के मध्य में प्राण (आत्मा) को याद करे और **'अणोरणीयांसमनुस्मरेत् यः'** अर्थात् आत्मा अणु से भी अणु रूप है। आत्मा का रूप अणु (बिन्दु) है- यह बात इन्हें अच्छी लगी। तो इन्होंने कहा कि ठीक है हम यह प्रैक्टिस करेंगे।

उसके बाद जब बाबा सरला बहन के पास मुरलियाँ लेने के लिए गए तो उस संचालिका बहन ने मुरलियाँ देने से यह कहकर इनकार कर दिया कि आप शास्त्रकार हैं, आप शिवबाबा की वाणी पढ़ने के लायक नहीं हैं। इन बातों से उनको बड़ा दुःख हुआ कि भगवान के महावाक्य पढ़ने और समझने के हकदार तो सभी हैं, जबकि यह हमारे चाहने के बाद भी इनकार कर रहे हैं। इसलिए तो शिवबाबा ने देहधारी गुरुओं द्वारा किए जाने वाले इस प्रकार के व्यवहार के बारे में पहले से ही मुरली में सचेत कर दिया था। ब्रह्माकुमारियों द्वारा प्रकाशित रिवाइज़्ड साकार मुरली तारीख **21.02.86, पृ.3 मध्यादि** में शिवबाबा ने कहा है- **''सबका आधार मुरली पर है। मुरली तुमको न मिलेगी तो तुम 'श्रीमत' कहाँ से लाएँगे? ऐसे नहीं, सिर्फ एक ब्राह्मणी को ही मुरली सुनानी है। कोई भी मुरली पढ़कर सुना सकते हैं।''** इसके अलावा रि. **मु.ता. 22.12.91 पृ.2 मध्य** में कहा है कि **''जो बाबा की मुरली निकलती है, सब स्टुडेण्ट को हक है मुरली अच्छी तरह पढ़ने का। जिनको मुरली का शौक होगा वह तीन-चार बारी मुरली ज़रूर पढ़ेंगे। मुरली बगैर और कुछ सूझना ही नहीं चाहिए। मुरली को कोई 5-8 बारी अच्छी रीति पढ़े तो ब्राह्मणी से भी ऊँच जा सकते हो। सबको अपनी उन्नति करनी है।''** इसी श्रीमत को ध्यान में रखते हुए थोड़े समय के पश्चात् वेदांती बहन (जिन्होंने बाबा को टैकिल किया था) ने बाबा से कहा कि उचित समय आने पर आपको मुरलियों का बंडल निकाल करके दे देंगे। अतः जिन दिनों इंचार्ज सरला बहन वहाँ मौजूद नहीं रहती थी उन दिनों बाबा को वहाँ से वाणियों का बंडल मिलता रहता था, फिर बाबा उन वाणियों को पढ़कर वापस भी कर देते थे और यह क्रम बड़ी बहन की अनुपस्थिति में लगातार चलता रहा अर्थात् वे हर तीसरे-चौथे दिन मुरलियों का स्टॉक ले जाते रहे। उनसे उनको इतनी पुष्टि और संतुष्टि मिली कि वे गद्गद् हो गए। अंदर से उन्हें सारी बातों का समाधान मिलने लगा। बाद में उन्होंने नियमित रूप से शिवबाबा की वाणी सुनने के लिए ब्रह्माकुमारी सेवाकेंद्र में जाना शुरू कर दिया; क्योंकि रिसर्च में इनको यह सिखाया गया था कि अगर किसी भी विषय पर रिसर्च करना है तो उसके मूल को पकड़ना ज़रूरी है।

इसके बाद ब्रह्माकुमारी बहनों की बातों को बाबा ने महत्व नहीं दिया; क्योंकि शिवबाबा की वाणी में बाबा दीक्षित जी ने यह महावाक्य पढ़ा था-**''ब्रह्माकुमारी की मत मिलती है सो भी** ('श्रीमत' अर्थात् शिवबाबा की वाणियों से) **जाँच करनी होती है कि यह मत राइट है वा राँग है। तुम बच्चों को राइट और राँग समझ भी अभी मिली है। मु.ता. 21.01.2000 पृ.3 मध्य''** जबकि माउण्ट आबू में तथाकथित ब्रह्माकुमार-कुमारियों द्वारा इन बातों में ढिलाई बरतने के कारण दिनांक **30.05.73 पृ.81 मध्य** की **अव्यक्त वाणी** में अव्यक्त बापदादा ने स्पष्ट कह दिया कि **''हरेक को अपनी ज़िम्मेवारी आप उठानी है। अगर यह सोचेंगे कि दीदी, दादी व टीचर ज़िम्मेवार हैं तो इससे सिद्ध होता है कि आपको भविष्य में उन ही की प्रजा बनना है, राजा नहीं बनना है।** (जबकि शिवबाबा आए ही हैं राजा बनाने के लिए)। **यह भी अधीन रहने के संस्कार हुए न? जो अधीन रहने वाला है वह अधिकारी नहीं बन सकता। विश्व का राज्य-भाग्य नहीं ले पाता। इसलिए स्वयं के ज़िम्मेवार, फिर सारे विश्व की ज़िम्मेवारी लेने वाले विश्व महाराजन बन सकते हैं।''** यानी बाबा दीक्षित जी के सामने कोई भी समस्या आती थी तो वे मुरलियों/अव्यक्त-वाणियों को ही टटोलते थे। बाबा को अपने रिसर्च वर्क के लिए जो सब्जेक्ट मिला हुआ था उसे उन्होंने ब्रह्मा बाबा की वाणियों से टैली करना शुरू किया। जब उन्हें शास्त्रों की सारी बातें ब्रह्मा बाबा की वाणियों से बिल्कुल टैली होती लगने लगीं तो उस थीसिस में उन्हें बड़ा

मज़ा आने लगा। वह थीसिस ऐसी तैयार हुई कि बाबा ने मुरलियों से जो कुछ समझा वह सारी थ्योरी शास्त्रों से प्रमाणित होकर शोधग्रंथ के रूप में सामने आ गई।

क्लास में क्लास की टीचर बहन अपने तरीके से मुरलियों की व्याख्या देती थी, जिस पर बाबा ध्यान नहीं देते थे; क्योंकि वे अंदर से मुरलियों के सारे रहस्यों को समझ रहे थे। अतः मुरलियों/अव्यक्त-वाणियों को समझकर बाबा ने जो धारणा पैदा की और तदनुसार वे जो कुछ टीचर बहनों को बताना चाहते थे या सुनाना चाहते थे, वह धारणा बहनों को पसंद नहीं आती थी; क्योंकि ब्रह्माकुमारियों का कहना यह था कि शास्त्र सब झूठे हैं, शिवबाबा ने जो कुछ बोला है सिर्फ वही सच्चा है और बाबा दीक्षित जी का कहना यह था कि शिव सुप्रीम सोल ने ब्रह्मा द्वारा जो कुछ सुनाया है वह सब-कुछ शास्त्रों के अनुकूल ही है। हमारा अलग से कोई मंतव्य नहीं है और न ही हम अपने को इस योग्य समझते हैं; क्योंकि दीक्षित जी जो कुछ भी बोलते थे उसका मूल आधार ब्रह्माकुमारी आश्रम में उपलब्ध शिवबाबा के वर्शन्स ही हैं। सिर्फ वही बाबा के प्राण हैं। अधिकतर पुरानी ब्रह्माकुमारियाँ पढ़ी-लिखी न होने के कारण मुरलियों की सही तरीके से व्याख्या नहीं कर सकती हैं और दुनिया को यह भी नहीं समझा सकती हैं कि गीता का भगवान निराकार शिव है, न कि साकार कृष्ण। जबकि हम निराकार, साकार दोनों को ही मानते हैं। निराकार का मतलब है ज्योतिर्बिंदु शिव। ज्योतिर्बिंदु शिव साकार शरीर के बिना गीता-ज्ञान कैसे दे सकते हैं? तो वह ज्योतिर्बिंदु शिव राम/कृष्ण की आत्माओं के वर्तमान संगमयुगी शरीरों (अर्थात् शंकर/ब्रह्मा) में अलग-2 समय पर प्रवेश करते हैं। राम-कृष्ण की आत्माएँ तो साधारण रूप में इसी दुनिया में कहीं न कहीं हमारी-आपकी तरह गिरी हुई अवस्था में मौजूद हैं। पतित, विकारी अवस्था में होने के कारण उनमें क्रमशः सुप्रीम सोल शिव प्रवेश करके गीता का ज्ञान सुनाते हैं। वास्तव में दादा लेखराज ब्रह्मा ही 16 कला सं. कृष्ण की आत्मा है। **'हे कृष्ण नारायण वासुदेवः।'** नारायण को पौराणिक परंपरा में सतयुग का राजा माना गया है। वह सतयुग का राजा तो बाद में बनता है। वास्तव में पूर्वजन्म में (माना संगमयुग में) वह ब्रह्मा था। ब्रह्मा को दाढ़ी, मूँछ दिखाई जाती है। दाढ़ी, मूँछ पतित मनुष्यों को होती है। इसलिए ब्रह्मा की पूजा नहीं होती, मंदिर भी नहीं बनते। परमपिता शिव ब्रह्मा में प्रवेश करके जो मुरलियाँ चलाते हैं, उनकी टीचर के रूप में व्याख्या से ही सारे जगत का कल्याण होता है; लेकिन अगर उसके सही अर्थ को समझा जाए तो, अन्यथा नहीं।

यही कारण है कि ब्रह्माकुमारियों का बाबा दीक्षित जी के साथ मतभेद पैदा हो गया। इसलिए उन्होंने उन्हें भाषण करने, क्लास समझाने व प्रदर्शनी समझाने के लिए कभी मौका नहीं दिया। लगभग सन् 1974 तक यह सिलसिला चलता रहा। बाबा दीक्षित जी उनको यथासम्भव सहयोग देते रहे। ईश्वरीय सेवा में ज़्यादातर उन्हें लिट्रेचर बेचने का काम ही सौंपा गया। कभी-2 सेण्टर के लिए स्टेशन से वे पार्सल छुड़ा कर लाने तथा पार्सल बुकिंग करने के लिए भी जाते थे। उन दिनों कभी-2 क्लर्क को पैसा भी देना पड़ता था। तो वे भले लेट कर लेते थे; लेकिन रिश्वत के बतौर क्लर्क को कभी पैसा नहीं देते थे। बाबा के लेट आने के कारण केंद्र की संचालिका बहन नाराज़ हो जाया करती थी और उनको यह कहा करती थी कि तुम किसी भी काम में टाइम वेस्ट बहुत करते हो। ऐसे ही एक बार इस पर जब तक बाबा दीक्षित जी उस बहन को कुछ बोलें तब तक वह दूसरे भाई का मिसाल देकर कहने लगी कि देखो, वह भाई कितनी जल्दी काम करके लाता है। यह बात सुनते ही बाबा दीक्षितजी को रोना-सा आ गया और उन्होंने कहा कि हम क्या करें, बताइए? जिस भ्रष्टाचार से बचने के लिए हम बार-2 नौकरियाँ छोड़-2 करके बैठे हैं और आप हमें उसी बात के लिए दबाव डाल रही हैं। इस काम के लिए न तो हम आपसे पैसा माँग सकते हैं और न ही हमारे पास इतना पैसा है। ये सब बातें सुनने के बावजूद भी उस संचालिका बहन ने उनको कहा कि अच्छा ठीक है, तुमको जैसे हम बताते हैं वैसे करो। यदि नहीं चाहते हो तो आश्रम में सेवा मत करो।

तो बाबा दीक्षित जी मंदिरों में जा-जाकर सेवा करने लगे। सुबह को क्लास अटैण्ड करना और रिसर्च से जो टाइम

बचता था उसमें मंदिरों में जाकर भाई-बहनों की सेवा करने लगे, जिसमें सेण्टर के भी स्टुडेण्ट्स मंदिर में आकर बाबा के साथ क्लास करने लगे। वे लोग बाबा को अपने घर बुलाने लगे। उनमें से एक मनु भाई (जो कि बाद में अहमदाबाद छोड़कर अमेरिका चले गए थे) ने उनको अपने घर ले जाकर क्लास शुरू करवा दिया। शाम को बाबा मनु भाई के घर में शिवबाबा की मुरली पढ़ते थे और उसकी व्याख्या जैसा वे समझते थे वैसा देने लगे। यह बात जब सेण्टर की बहनों को पता चली तो वे बहुत नाराज़ होने लगीं; क्योंकि उनके अंदर गलत धारणा बैठ गई कि यह तो हमारे स्टुडेण्ट्स को तोड़ रहा है और अपनी कमाई करना शुरू कर दिया है। जबकि ऐसी कोई बात नहीं थी। ब्रह्माकुमारियाँ विरोध करती रहीं। तो छः महीने तक यह सिलसिला चलता रहा। बी॰के॰ क्लास में तो बाबा जाते ही रहते थे। संचालिका बहन ने इनसे आश्रम का काम लेना पहले ही बंद कर दिया था और इस तरह मतभेद बढ़ता ही गया। एक दिन संचालिका बहन ने सोचा कि हमारे कहने से तो यह मानेगा नहीं। इसके लिए उन्होंने षड़यंत्र रचकर यह प्रोग्राम बनाया कि दक्षिण भारत से (वाया अहमदाबाद) माउण्ट आबू जाने वाली एक पार्टी का सामान उन्होंने अपने केंद्र पर रखवा लिया और उस पार्टी को माउण्ट आबू जाने दिया। वह सामान रखवा लेने के ठीक अगले दिन बाबा दीक्षित जी से सरला बहन अचानक बोली कि बहुत दिनों से यहाँ पर कोई सर्विसएबुल भाई नहीं है, सेवा करने के लिए कोई तैयार नहीं होता है। यह सामान इतने दिनों से यहाँ पड़ा हुआ है। इसको माउण्ट आबू पहुँचाना है। आप इसे वहाँ पहुँचाएँगे? बाबा ने सामान उठा करके यह कहा कि अच्छा, हम पहुँचाएँगे; क्योंकि वे कभी सेवा के लिए मना नहीं करते थे। वे सारे सामान का रिजर्वेशन कराके अहमदाबाद रेलवे स्टेशन से माउण्ट आबू चले गए।

2. माउण्ट आबू में प्रकाशमणि दादी ने बाबा को प्रताड़ित किया

माउण्ट आबू पहुँचने के बाद ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका प्रकाशमणि (कुमारिका) दादी ने बाबा दीक्षित जी से कहा कि आप शाम को चार बजे हमसे मिलें। बाबा को यह पता नहीं था कि वह क्यों बुला रही हैं। चार बजे वे जब दादी के पास पहुँचे, तो पहुँचते ही दादी ने उन्हें डाँटना शुरू कर दिया कि तुम जैसे शांति से पहले रहते थे, यहाँ आते थे वैसे ही शांति से रहो। तुम इधर-उधर धमचक्र क्यों मचाते हो? तो उन्होंने कहा कि दादी जी, हम तो शिवबाबा की बातें करते हैं, कोई फालतू बातें तो करते ही नहीं और वैसे भी शिवबाबा ने तो यह बोला ही है कि **''शिव के मंदिर में दो तरह के पक्षी होते हैं- एक होते हैं कबूतर और एक होते हैं ज्ञान की कंठी वाले तोते।''** इस तरह से शिवबाबा के महावाक्यों को बाबा दीक्षित जी ने उनके सामने रखते हुए कहा कि **''कंठी वाले तोते होते हैं उनको ज्ञान की कंठी पड़ी हुई होती है। माना उनके कंठ में से जब भी आवाज़ निकलेगी, जो कुछ सुनेंगे बाहर जा करके 'ट्रयों-2' की ज्ञान की ही आवाज़ करेंगे और कबूतर जो होते हैं वे मंदिरों में शिवलिंग के ऊपर गंद करते हैं और उनके मुख से आवाज़ भी नहीं निकलती है।''** यह सारा मिसाल शिवबाबा ने हम ब्राह्मण बच्चों के लिए ही दिया है। अतः बाबा ने उन्हें स्पष्ट कह दिया कि भगवान की जो राइट बातें हैं, जो हमने सुनी हैं, हम तो वह ज़रूर सुनाएँगे। आपके कहने से हम मानने वाले नहीं हैं। बस, इतना सुनते ही दादी एकदम गुस्सा हो गईं। तुरन्त उन्होंने एक चपरासी को बुलाकर कह दिया कि इनको जल्दी से जल्दी बस स्टैण्ड पर पहुँचाकर रवाना कर दो।

रात को छः-सात बजे की बात थी, सर्दी के दिन थे। वहाँ पर कोई बस नहीं मिली और रास्ते से चलते समय वह चपरासी बाबा से कहने लगा कि आजकल के जो पढ़े-लिखे लोग हैं वो घास खाते हैं। बाबा को लगा कि यह तो यह बात हम पर लागू कर रहा है, इसलिए उन्होंने सोचा कि इसे ज्ञान देना ज़रूरी है। तो मौका पाकर बाबा ने उस चपरासी को थोड़ी-2 ज्ञान की बातें बतलाना शुरू किया। बस स्टैण्ड तक पहुँचते-2 वह मोल्ड हो गया और बोला, आपकी बात तो एकदम ठीक है। उसने बाद में बड़ी कोशिश भी की कि कोई गाड़ी या टैक्सी मिल जाए; लेकिन नहीं मिली। फिर उसने जब तक कुमारिका दादी

को फोन किया तब तक दादी एकदम गुस्से में वहाँ ऑफिस से उठकर चली गई थीं। किसी अन्य बहन ने फोन अटैण्ड किया था। उनको तो पता ही नहीं था कि क्या-2 बातें हुई थीं। उन्होंने तो सीधा कह दिया कि कोई बात नहीं, उस भाई को वापस ले आओ। दूसरे दिन सुबह जब कुमारिका दादी क्लास करा रही थीं तो बाबा दीक्षित जी उनके सामने जाकर बैठ गए और क्लास के बाद वे अपना बैग लेकर निकल पड़े। यह घटना है जनवरी, सन् 1974 की।

बाबा ने जून, 1975 में अहमदाबाद भी छोड़ दिया। उसका भी कारण यह हुआ कि जब माउण्ट आबू से लौटे तो लौटने के बाद अचानक कुमारिका दादी ने कोई आदेश अहमदाबाद इंचार्ज को दे दिया। उस आदेश के अनुसार उन्होंने बाबा दीक्षित जी का क्लास में बैठना बंद करा दिया। एक दिन ऐसे हुआ कि क्लास हो रहा था, अचानक कुछ भाई लोग आए और बाबा से कहा कि दादी ने आपको क्लास करने के लिए मना किया हुआ है। तब बाबा ने उनसे कहा कि दादी ने मना किया हुआ है; लेकिन शिवबाबा ने तो किसी वाणी में ऐसे नहीं कहा कि किसी को क्लास करने से मना कर दो। हमारी कोई गलती हो तो वह हमें बताइए, तो उसे हम सुधारेंगे। तो उन्होंने कहा कि नहीं, हम तुम्हारी कोई बात नहीं सुनेंगे। तब बाबा ने भी कहा कि तो हम आपकी बात भी नहीं सुनेंगे। यह कहकर वे क्लास में ही बैठे रहे। फिर वे चार-पाँच लोग अंदर चले गए और वहाँ टीचर बहन से कुछ परामर्श किया। परामर्श करने के आधा घंटे के बाद चार-पाँच भाई लोग बाहर आए और किसी ने बाबा के हाथ पकड़े और किसी ने पाँव पकड़े और उनको उठाकर सीढ़ियों से नीचे ले जाकर आश्रम के बाहर छोड़ दिया। उसके बाद दो भाई लोग दरवाजे पर चौकसी के लिए खड़े हो गए, ताकि वे क्लास करने के लिए अंदर न जा पाएँ। तीन दिन तक यह क्रम चलता रहा। जैसे ही बाबा सुबह और शाम क्लास करने के लिए वहाँ जाते थे, तो वे भाई लोग वहाँ दरवाजे पर उनको खड़े हुए मिलते थे। बाकी सब भाई-बहनों को क्लास करने जाने दिया जाता था; लेकिन केवल बाबा बाहर दरवाजे पर खड़े रहते थे। फिर उनका वहाँ जाना ही छूट गया।

फिर बाबा ने यह बात पुलिस को रिपोर्ट कर दी; लेकिन बात ऐसी हो गई कि एक-दो महीने पहले अहमदाबाद में ब्रह्माकुमारियों का बड़ा मेले का प्रोग्राम आयोजित हुआ था, जिसमें अहमदाबाद की लगभग आधी से ज़्यादा जनता उस प्रोग्राम में शामिल हुई थी। बहुत बड़ा मेला होने के कारण पुलिस भी बहुत ज़्यादा प्रभावित थी। तो बाबा दीक्षित जी ऐसी रिपोर्ट लिखवाना चाहते थे कि सार्वजनिक स्थान पर जाने से इन्हें क्यों रोका जा रहा है जबकि ये तो वहाँ के पुराने स्टुडेण्ट थे; लेकिन उस दौरान ब्रह्माकुमारी संस्था से प्रभावित होने के कारण उस दरोगा ने 341वीं धारा में इनकी बात को नहीं लिखा। सिर्फ मार-पीट के केस में रिपोर्ट लिख दी। इसके बाद बाबा जब दूसरे बी.के. सेवाकेन्द्र पर क्लास करने गए तो वहाँ भी उन्हें दरवाजे पर ही रोक दिया गया। दो-तीन दिन बाद जब बाबा उस पालड़ी एरिया की पुलिस स्टेशन में कम्प्लेण्ट लिखाने गए तो वहाँ पर भी दरोगा ने उनको उल्टा डाँट दिया। अंततः मणिनगर आश्रम से लगी हुई पुलिस में एक पठान दरोगा था, उन्होंने बाबा को कहा कि ठीक है, 341वीं धारा में आपके मौलिक अधिकार के हनन की रिपोर्ट हम लिखेंगे; लेकिन इसके पहले हमको इन्क्वायरी करने के लिए दो-तीन दिन चाहिए। फिर उन्होंने ब्रह्माकुमारियों को पुलिस स्टेशन पर बुलाना शुरू कर दिया। बस, इससे ब्रह्माकुमारियों में हड़कम्प फैल गया। शीघ्र ही उन्होंने संस्था के नियमों के विरुद्ध अपने-2 स्थानीय सेण्टर्स के गेट पर यह झूठा बोर्ड टाँगना शुरू कर दिया कि यह सार्वजनिक संस्था नहीं है और बिना आज्ञा के प्रवेश करना वर्जित है। यह बोर्ड अहमदाबाद के तत्कालीन तीनों सेवाकेन्द्रों में लगा दिया गया। बोर्ड पढ़कर वह दरोगा भी मुगालते में पड़ गया। फिर बाबा वकील से जाकर मिले। तो उन्होंने कहा कि यहाँ की पुलिस आपका साथ नहीं देगी। यहाँ आपको कोई गवाह भी नहीं मिलने वाला है। आपके पास पैसा भी नहीं है, वजीफा (scholarship) भी आपका बंद हो चुका है। इसलिए आप अपने गाँव चले जाइए और वहाँ यथासम्भव जनता की सेवा कीजिए।

फिर बाबा दीक्षित जी सन् 1975 में, 33 वर्ष की उम्र में अहमदाबाद छोड़कर कम्पिला गाँव में अपने घर वापस लौट गए।

3. विश्व कल्याण के नशे में कम्पिला से दिल्ली राजधानी की ओर बाबा की रवानगी

उधर घर में भी गाँव के कुछ लोगों ने उनके पिताजी सोहनलाल दीक्षित जी को यह कहकर मतिभ्रम कर दिया था कि आपका लड़का ब्रह्माकुमारियों में फँस गया है। उन लोगों की बातों के प्रभाव में आकर पिताजी ने बाबा की एक भी बात नहीं सुनी। इनके घर का बाहर का जो कमरा था वह भी बाबा को देने से इनकार कर दिया। इसी बीच में बाबा ने शिवबाबा की मुरली से एक महावाक्य पकड़ लिया कि **''आवाज़ दिल्ली से निकलेगा।''** तुरन्त ही वे कम्पिला गाँव छोड़कर दिल्ली चले गए और दिल्ली पहुँचते ही उनको सफलता मिल गई। वहाँ के जो खास बीस-पच्चीस सेवाकेन्द्र थे उनमें उन्होंने चक्कर लगाए और चक्कर लगाते-2 उनको शाहदरा रोहतास सेवाकेन्द्र के कुछ भाई-बहनों को ईश्वरीय ज्ञान सुनाने का थोड़ा मौका मिलने लगा; क्योंकि उस वक्त उधर की टीचर्स बहनें माउण्ट आबू गई हुई थीं। बाबा ने वहाँ के जिज्ञासुओं को मुरली सुनाना शुरू कर दिया। इस तरह इस ईश्वरीय सेवा की शुरुआत उन्होंने शाहदरा आश्रम से की। इस प्रकार वे अन्य ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्रों में भी चक्कर काटते रहे और भाई-बहनों को मुरली की व्याख्याएँ सुनाते रहे।

उन सेवाकेंद्रों में भी जो यमुना के किनारे के सेवाकेन्द्र थे वहाँ के ज़्यादातर जिज्ञासु उनके सम्पर्क में आने लगे। यह खबर तथाकथित ब्रह्माकुमार-कुमारियों के कान में लगती रही थी और उनके अंदर ही अंदर अशांति और क्रोध पैदा हो रहा था। तो उन्होंने जीप, कार लेकर बाबा दीक्षित जी का पीछा करना शुरू कर दिया। उन्होंने बाबा दीक्षित जी को पकड़ने की कोशिश की; लेकिन पुष्पा माता के जिस घर में बाबा रहते थे, वहाँ उस दिन वे उनको मिले नहीं; लेकिन उस वक्त शर्मा जी (पुष्पा माताजी के युगल) घर में मौजूद थे। तथाकथित ब्रह्माकुमारों ने गलती से शर्मा जी को बाबा समझकर उनको पकड़कर जीप में बिठा लिया; लेकिन जब शर्मा जी अपनी पंजाबी भाषा में उनको कुछ कहने लगे तब एक भाई ने कहा कि अरे, यह तो वीरेन्द्र दीक्षित नहीं है, यह तो कोई और है। फिर उन ब्रह्माकुमारों ने शर्मा जी को छोड़ दिया और पुष्पा माता को नौकरी छुड़वाने की धमकी देकर अपनी जीप, कार लेकर चले गए। उसके ठीक दस मिनट बाद बाबा दीक्षित जी वहाँ आ गए। बाबा समझ गए कि अब तो ये लोग हमारा पीछा छोड़ने वाले नहीं हैं। इसलिए बाबा ने दिल्ली का ऑल रूट पास बनवा लिया और एक जगह से दूसरी जगह, दूसरी जगह से तीसरी जगह, ऐसे सारी दिल्ली में घूमने लगे। साथ में अपना जो कुछ ज्ञान का मंथन था वह लोगों को सुनाने भी लगे।

इस तरह तथाकथित ब्रह्माकुमारों ने लगभग पाँच साल तक बाबा का पीछा किया; लेकिन वे उनकी पकड़ में नहीं आए। उनको जो कुछ सुनाना था वह घर-2 में जाकर सुनाने लगे। बाबा दीक्षित जी से ऐसे ज्ञान सुनते-2 सन् 1976 तक जो लोग उनके सहयोगी बने थे, उनमें बी.के. रवीश कुमार सक्सेना (जो दिल्ली में भारत सरकार वित्त मंत्रालय में काम करते थे) और बी.के. अशोक पाहूजा (जो सी.आई.डी. पुलिस में काम करते थे और बाद में किरन बेदी द्वारा सस्पेण्ड हो गए, फिर नौकरी भी छूट गई) शामिल थे। ये लोग बाबा के सक्रिय सहयोगी बन गए और शुरुआत में इन्होंने बाबा का लिट्रेचर भी छपवाया। ब्रह्माकुमारी आश्रमों में पोस्ट भी कर दिया। इस वजह से ब्रह्माकुमारी आश्रमों में अच्छी तरह हलचल फैल गई थी; लेकिन जो बहनें उस समय बाबा के कनेक्शन में आने लगीं उनमें एक ब्र.कु. प्रेमकान्ता बहन थी, जो बाबा दीक्षित जी की ज़्यादा सहयोगी बनी और सन् 1978 आते-2 वह अपने माँ-बाप से स्वीकृति लेकर बाबा के साथ रहने भी लगी। इसी दौरान भाई-बहनों के सहयोग से आर.के. पुरम, दिल्ली में एडवांस पार्टी का एक सेवाकेंद्र खुल गया। बाबा और वह बहन वहाँ रहने लगे। प्रेमकान्ता बहन एक प्राइवेट कम्पनी में नौकरी कर रही थी। अतः साथ में रहने और सहयोगी बनने के दौरान बाबा

दीक्षित जी ने उनसे कहा कि आप नौकरी छोड़ दीजिए। आप चिंता मत कीजिए कि खर्चा कहाँ से चलेगा। इसके लिए हम जिम्मेवार हैं; लेकिन उनको बाबा की इस बात पर विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि हम नौकरी नहीं छोड़ेंगे। नौकरी के पैसे से हम आपको सहयोग करेंगे।

कुछ समय बीतने पर उस बहन ने बाबा से कहा कि हमारे पास इन अशोक पाहूजा, रवीश सक्सेना आदि भाइयों का बार-2 फोन आता है और वे कह रहे थे कि जब आप वीरेन्द्र भाई के साथ रह सकती हो तो हमारी गीता-पाठशाला में भी दो-चार रोज़ के लिए क्यों नहीं रह सकती हो? इस पर बाबा दीक्षित जी ने कहा कि देखो, आपके माँ-बाप से सहमति लेकर हम आपको अपनी ज़िम्मेवारी पर लाए हैं। परमिशन हमने ली है। यदि आप उसके घर में रहने गईं और कहीं कुछ अनहोनी बात बन गई तो पकड़ा कौन जाएगा? इसलिए मैं परमिशन नहीं दे सकता। आपको अगर जाना है तो भले उनके पास स्वेच्छा से चली जाओ। तो उस समय तो उन्होंने बाबा की बातों को मान लिया; लेकिन दूसरे-तीसरे दिन वह बाबा से यह कहकर चली गई कि मैं अपने माँ-बाप के घर जा रही हूँ, जबकि वह माँ-बाप के पास नहीं गई थी। पाँच दिन तक बाबा दीक्षित जी ने उनका इंतजार किया; लेकिन कुछ पता नहीं चला। फिर जब बाबा उस बहन के घर पहुँचे तो उनके माँ-बाप ने कहा कि वह तो यहाँ नहीं आई। यह सुनते ही बाबा दीक्षित जी ने समझ लिया कि उस बहन ने वही काम कर दिया जो उन्हें नहीं करना था। उसके बाद बाबा जब सेवाकेंद्र में लौटे तो देखा कि रवीश सक्सेना, अशोक पाहूजा और धर्म सिंह लोनी आदि दूसरे-2 लोग, जिनको यह जलन थी कि यह बहन बाबा दीक्षित जी के साथ ही क्यों रहने लगी है, वे सभी एक ग्रुप बनाकर नीचे पार्क में बैठे हुए हैं। बाबा के सेवाकेंद्र के ऊपर के बड़े हॉल में पहुँचते ही वे सभी पार्क से उठकर बाबा के पास आए। वे सभी बाबा से झगड़ा करने लगे। बाबा तो अकेले थे। उन सभी ने चारों तरफ से बोलना शुरू कर दिया। यह सीन देखकर बाबा ने बोला कि यह तो ऐसा है जैसे कि किसी गाँव में कोई कुत्ता जाता है तो चारों तरफ से दूसरे कुत्ते चेंथने लगते हैं। यह कहते ही अशोक पाहूजा ने बाबा दीक्षित जी के ऊपर हाथ भी चला दिया।

इसके लिए माउण्ट आबू में शिवबाबा ने **मु.ता. 5.2.74 पृ.2** के **मध्यांत** में बोला है- **''योगबल से होती है स्थापना, बाहुबल से होता है विनाश।''** वहाँ जो कुछ भी हुआ उसका परिणाम यह हुआ कि उन लोगों ने प्रेमकान्ता बहन के पिता को भड़काया जिस कारण वे आकर उस बहन को अपने घर ले गए। बाद में बाबा दीक्षित जी पुष्पा माता के साथ उसी घर में रहकर चार-पाँच दिन तक उस बहन का इंतजार करते रहे। जब वह वापस नहीं आई तो उन्होंने सेवाकेंद्र छोड़ दिया और ऑल इंडिया टूर पर निकल गए; क्योंकि दिल्ली में उनका अपना तो कोई ठिकाना ही नहीं था। तो कहीं रुकने का कोई सवाल ही नहीं था। उस समय सस्ते में ऑल इंडिया रेलवे टूर टिकट भी बनते थे। 150 रुपये में, 250 रुपये में और 300 रुपये में दो-2, तीन-2 महीने के सर्कुलर रूट पास बनवाकर वे सारे भारत में जून, सन् 1982 तक चक्कर लगाते रहे। फिर जब बाबा दीक्षित जी कानपुर में थे तो कम्पिला गाँव के किसी व्यक्ति से उनकी मुलाकात हुई और उसने बताया कि आपके पिताजी की तबीयत ठीक नहीं है, यदि आप घर पहुँचें तो बेहतर होगा। तो बाबा दीक्षित जी ने उनको बतलाया कि दो दिन के बाद हमारा दिल्ली जाने का प्रोग्राम है, तो उस वक्त हम कम्पिला होते हुए दिल्ली जाएँगे। दो दिन बाद जब तक बाबा घर आए तो देखा कि पिताजी ने शरीर छोड़ दिया था। उनकी छोटी बहन ने क्रिया कर्म किया था।

इसके बाद सन् 1982 में बाबा अपने पैतृक गाँव कम्पिला के अपने ही घर में स्थायी हो गए; क्योंकि इन्हें तो तीन पैर पृथ्वी चाहिए थी। 1983 ई. में पुष्पा माता ने अपनी कन्या **ब्र.कु. कमला देवी शर्मा** को ईश्वरीय सेवार्थ बाबा के पास सरेण्डर कर दिया और तब से वह कन्या **यज्ञ माता** के रूप में बाबा की सहयोगी बनी। हालाँकि सन् 1976 से भी इनका भरपूर सहयोग रहा है। इस तरह यज्ञ माता कमला देवी जी द्वारा धीरे-2 दूर-दराज़ के शहरों से आने वाली ब्रह्माकुमार-कुमारियों की

पार्टियों को ज्ञान की अपेक्षित पालना मिलने लगी। दिल्ली से, कानपुर से, वाराणसी से जो भी पार्टियाँ आती रहीं वे एडवांस ज्ञान की परवरिश लेती रहीं। धीरे-2 आने वालों की संख्या बढ़ने लगी। अंततः कुछ समय बीतने के पश्चात् ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, माउण्ट आबू से ब्रह्मा मुख द्वारा उच्चारित शिव के ज्ञान रतन जिसे **'मुरली'** कहा जाता है उनमें से विशेष प्रामाणिक तथ्यों के आधार पर ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्रों से आने वाले असन्तुष्ट ब्रह्माकुमार-कुमारियों ने बाबा वीरेन्द्र देव दीक्षित जी द्वारा की गई मुरलियों की व्याख्या का अनुमोदन करते हुए **'त्वमेव माता च पिता त्वमेव'** अर्थात् बाबा वीरेन्द्र देव दीक्षित जी को **'शिवबाबा केअर ऑफ प्रजापिता ब्रह्मा (जगत पिता)'** का साकार रूप और पहली सरेण्डर कन्या प्र.ब्र.कु. कमला देवी जी को **'ज्ञान-ज्ञानेश्वरी जगत माता (जगदम्बा)'** के साकार पार्ट माता के रूप में लिखित रूप में घोषित कर दिया (यह माता वही है जो यज्ञ के आदि में दादा लेखराज को हुए साक्षात्कारों को सुनने-सुनाने की प्रक्रिया के लिए निमित्त बनी थी और अब पुनर्जन्म लेकर आई है)। समय आने पर विशेष रूप से ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ और आम सारी दुनिया इन बातों की सच्चाई को मान ही लेंगी।

4. रवीश सक्सेना भाई, अशोक पाहूजा भाई और प्रेमकान्ता बहन का पुनः कई बार कम्पिला में आने और विरोधी बन जाने का सिलसिला

लगभग सन् 1984-85 में रवीश भाई अपनी गलतियों का पश्चाताप करते हुए पुनः कम्पिला स्थित आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय में आए। उन्होंने यहाँ की सारी बातें फिर से समझ करके दक्षिण भारत में जाकर बाबा का संदेश दिया और सन् 1989-90 तक आते-2 एक ही वर्ष में दक्षिण भारत तथा अन्य क्षेत्रों से नौ ब्रह्माकुमारियाँ अपने-2 सेण्टर छोड़कर यहाँ बाबा वीरेन्द्र देव दीक्षित जी और माता कमला देवी जी की देख-रेख में समर्पित हो गईं। जो सरेण्डर हुई थीं उनमें से कई तो ऐसी भी थीं जो वहाँ बी.के. आश्रमों की इंचार्ज थीं। अतः उनका ब्रह्माकुमारी आश्रम छोड़ जाना ब्रह्माकुमारी संस्था को बहुत बुरा लगा; क्योंकि उनमें से कुछ तो माउण्ट आबू में सरेण्डर होने वाली थीं। तो एक तरह से ब्रह्माकुमारियों के बीच में हड़कम्प मच गया और उन द्वारा सक्रिय विरोध होने लगा। इसी बीच रवीश भाई की बुद्धि पुनः घूम गई। फिर वे तीसरी बार सन् 1993-94 में कम्पिल सेवाकेंद्र में आए। दो-चार दिन रहकर फिर चले गए। अशोक भाई और प्रेमकान्ता बहन अलग-2 समय पर 1986-87 में दूसरी बार कम्पिल सेवाकेंद्र में ग्रुप के साथ आए थे। उसके बाद वे फिर विरोधी बन गए। कुछ वर्ष बीतने के पश्चात् 1995-96 में उन्होंने दिल्ली सेवाकेंद्र में आकर फिर से सात दिन का प्रशिक्षण लिया था, माफीनामा भी लिखा और सारी बातें समझकर चले गए; लेकिन सन् 1997 आते-2 वे पुनः विरोधी बन गए।

इसके पहले अशोक भाई ने लंदन के एक परिवार (ब्र.कु. तेजपाल सिंह और उनकी युगल बिंदी माता) को अच्छी तरह से बरगला करके उनकी सारी जायदाद बिकवा कर सन् 1987 में उन्हें अपने पास सरेण्डर करवा लिया था। उनका लंदन से धंधा-धोरी छुड़वा करके दिल्ली मॉडेल टाउन में उनको लाकर कई लाख की सम्पत्ति अपने कब्जे में कर ली। उन लंदन वालों के पास क्रेन और जीप-कार थी। बैंक बैलेन्स भी था। वह सब उन्होंने अपनी मुट्ठी में करके मॉडेल टाउन में सिर्फ छः महीने के लिए एक सेवाकेंद्र भी खोल दिया। पूरी सम्पत्ति हड़प ली और बिंदी माता को अपने कब्जे में भी कर लिया और जाली दस्तखत करके बहुत-सी सम्पत्ति अपने नाम पर करा ली, फिर उल्टा उन्हीं पर चार सौ बीसी का मुकदमा भी ठोंक दिया। उन पर आतंकवादी होने का इल्जाम भी लगाया गया। जब तेजपाल भाई के ऊपर 420 का केस कर दिया तो वे बेचारे घबराकर लंदन वापस चले गए और उन्होंने केस की ज़िम्मेवारी अपने पिताजी धर्मसिंह जी को सौंप दी। उसी दौरान धर्म सिंह जी उस कोर्ट केस में सहयोग लेने के लिए कम्पिला में बाबा के पास आए; परंतु बाबा के पास तो सिर्फ ज्ञान की ही मदद है, जो वे सुना पाते हैं। बाबा यह भी जानते थे कि अशोक भाई से लड़ने से कोई फायदा नहीं होगा; क्योंकि वह दुनियावी हथकंडों

में बहुत तीखा था। तत्पश्चात तेजपाल सिंह का पूरा परिवार कम्पिल सेवाकेंद्र से जुड़ गया।

5. पूर्व साज़िश के अनुसार कम्पिल सेवाकेंद्र तथा आस-पास में एक ही रात में कई निराली चोरियाँ

सन् 1986-87 में पचास हजार की समूची सम्पत्ति सेवाकेंद्र से चोरी हो गई। उस सम्पत्ति में मुख्य हिस्सा तो प्रेमकान्ता बहन के जेवर थे, जो कि उन्होंने दिल्ली में समर्पित होने के दौरान बाबा के पास सौंप दिए थे। वह चोरी भी इस एरिया की एक निराली किस्म की चोरी थी, जो कम्पिला क्षेत्र में पहले कभी नहीं हुई। 'दैनिक जागरण' आदि अखबारों में भी उस चोरी का हवाला छपा था। चोरी होने के 20-25 दिन पहले कम्पिला थाने के पुलिस का एक ड्राइवर सेवाकेंद्र में ज्ञान लेने अर्थ आने लगा था। वह ज्ञान बहुत कम सुनता था; लेकिन सेवाकेंद्र के अंदर घुसकर सेवाकेंद्र देखने के लिए वह ज़्यादा लालायित रहता था। बाबा ने समझ लिया कि इसको ज्ञान सुनने में उतनी रुचि नहीं है; परंतु किसी तरह से उसने 6-7 दिन ज्ञान सुना। कई बार उसने सेवाकेंद्र वालों से कहा भी था कि हमको अंदर दिखा दो। तो सेवाकेंद्र के एक सहयोगी सियाराम भाई ने उस पुलिस ड्राइवर को अंदर दिखा भी दिया था। ठीक उसके थोड़े दिनों के बाद सेवाकेंद्र में चोरी हो गई। उस समय ऊपर की बिल्डिंग नहीं बनी थी। (बाद में सन् 1991-92 में उस पुराने सेवाकेंद्र की ऊपर की बिल्डिंग भी तैयार हुई जो कि बाबा और सेवाकेंद्र के सहयोगियों ने अपने ही हाथों से बनाई थी। बाहर से कोई मजदूर नहीं लिया गया था)। इधर चोरी होने के समय बाबा उदयपुर पार्टी के साथ ऊपर छत पर लेटे हुए थे। छत से नीचे आने के लिए एक ही दरवाजा था। चोरी इस मायने में निराली थी कि बाहर से लेकर अंदर तक के दरवाजों, पेटियों, अलमारियों के जितने भी ताले थे वह सब खोल दिए गए। मास्टर की से या किसी भी तरीके से खोल दिए गए। उसी रात सेवाकेंद्र के आस-पास उसी सड़क पर चार और चोरियाँ भी हुई थीं। उस रात में सारा समय बिजली भी गुम रही। दूसरे दिन जब चोरी लिखवाने के लिए बाबा कम्पिला थाने गए तो उधर के दरोगा ने रिपोर्ट लिखने में आनाकानी की। गुस्से में आकर वे गालियाँ देने लगा कि रंडीबाज़ है, यहाँ आया हुआ है, यह है, वो है। जब बाबा ने ज़्यादा दबाव डाला तो दरोगा सोलंकी ने गाली देते हुए कहा- लिख दो साले की चोरी। क्या होता है लिखने से? जब सेवाकेंद्र के सहयोगी रफीउल्ला भाई ने दरोगा को समझाया तो वह थोड़ा शांत हुआ; लेकिन बाकी चार लोगों की चोरियों की रिपोर्ट लिखने से उन्होंने मना ही कर दिया।

यह चोरी होने से पहले कम्पिल सेवाकेंद्र में एक बार पुलिस इन्क्वायरी हुई थी कि यहाँ भ्रष्टाचार होता है, दुराचार होता है और वेश्यावृत्ति होती है। इस तरह की एक इन्क्वायरी पुलिस के एस.पी. द्वारा की गई। जब इन्क्वायरी के बाद बाबा ने उस कम्प्लेण्ट की एक कॉपी माँगी तो उन्होंने देने से इन्कार कर दिया। कम्प्लेण्ट में नाम रवीश सक्सेना का दिया हुआ था; लेकिन जब बाबा ने साइन चेक किया तो वह रवीश भाई का साइन नहीं था। रवीश भाई के साइन से बाबा अच्छी तरह से परिचित थे। जबकि रवीश भाई तो ऐसा चालाक, कानूनी व्यक्ति नहीं है जो इस तरह की झूठी रिपोर्ट करे।

6. आध्यात्मिक विद्यालय में आने वाले ज़्यादातर ब्रह्माकुमार-कुमारी, ब्रह्माकुमारी संस्था से असंतुष्ट या प्रताड़ित होकर आए हैं

माउण्ट आबू के विपक्षी ब्रह्माकुमार-कुमारियों ने कम्पिला में **'एडवांस पार्टी'** के रूप में चल रहे इस ईश्वरीय परिवार का नाम **'शंकर पार्टी'** रख दिया है, जबकि मुरलियों और अव्यक्त-वाणियों में कहीं पर भी शंकर पार्टी, विष्णु पार्टी या ब्रह्मा पार्टी का नाम नहीं आया है। यह तो उन्होंने अपनी मनमानी से नाम रखा है। जबकि बाबा दीक्षित जी की वही भाषा रही जो शिवबाबा की भाषा है; क्योंकि शिवबाबा ने तो मुरली में 'एडवान्स पार्टी' का ही जिक्र किया है। इधर माउण्ट आबू की मुख्य प्रशासिका प्रकाशमणि दादी से चारों ओर की ब्रह्माकुमारी इंचार्जों ने शिकायत करना शुरू कर दिया कि यह शंकर पार्टी हमारे सभी फॉलोअर्स को तोड़कर कम्पिला ले जा रही है, इसलिए आप कुछ कीजिए। इस प्रकार के सिद्धांतों में मत भिन्नता के

कारण दादी ने सीकर राजस्थान के एक ब्रह्माकुमार (राजकुमार सहगल) को शंकर पार्टी का विरोध करने के लिए अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया। दादी ने उनसे कहा कि आप शंकर पार्टी के विरोध में कुछ-न-कुछ मैटर लिखकर हमारे पास भेज दो ताकि हम उसको अपने प्रेस में छापेंगे और छपा हुआ मैटर सब ब्रह्माकुमारी आश्रमों में भेजेंगे। आप वह मैटर लेटर्स के रूप में वीरेन्द्र देव दीक्षित को संबोधित करके भेज दो। इस प्रकार बाबा वीरेन्द्र देव दीक्षित के अपोजीशन में ढेर सारे प्रिंट किए हुए मैटर्स सभी ब्रह्माकुमारी आश्रमों में भेजे जाने लगे। बल्कि अखबारों द्वारा इतना तीखा विरोध तो तथाकथित डुप्लीकेट विष्णु पार्टियों ने भी नहीं कर पाया जितना कि सहगलजी द्वारा मा. आबू में प्रिंट करके बाबा के पास और सभी बी.के. आश्रमों में भिजवाया गया है। उसकी फाइल बाबा के पास अब भी उपलब्ध है, जिसमें यह भी प्रिंट किया गया है कि वीरेन्द्र, आप जो वाणी चलाते हैं उसे आप बंद कर दीजिए; हालाँकि बाबा दीक्षित जी तो माउण्ट आबू में चलने वाली वाणियों की सही व्याख्या देते थे जो कि ब्रह्माकुमारियों की अपनी समझ के विपरीत जाती थी; परंतु शास्त्रों के अनुकूल थी। यह मुरली की व्याख्या तथाकथित झूठे ब्रह्माकुमार-कुमारियों के अंदर ही अंदर एक तरह का भय पैदा करती थी।

सन् 1987-88 से देश के कोने-2 से बहुत तेजी से पार्टियाँ कम्पिल सेवाकेंद्र में आने लगीं। तो बाबा माउंट आबू की मुरलियों और अव्यक्त-वाणियों की व्याख्या करने लगे। जैसे बाबा वीरेंद्र देव दीक्षित जी वाणियों का अर्थ समझाते वैसे कैसेटों में आने वाली पार्टियों के लोगों द्वारा भरा जाने लगा और यह विरोध करने वाले तथाकथित विष्णु पार्टी के लोग भी पहले उन्हीं कैसेटों को फॉलो करते थे। बाद में विरोधी बन गए। माउण्ट आबू से सम्बन्धित आश्रमों के संचालकों ने यह कहना शुरू कर दिया कि आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय, कम्पिला से उनका कोई कनेक्शन नहीं है। जबकि उन्हीं के द्वारा छपाई गई दिनांक **2.8.72 पृ. 349 अव्यक्त वाणी** के **मध्य** में बापदादा ने कहा हुआ है- **''एडवांस पार्टी का कार्य चल रहा है। आप लोगों के लिए सारी फील्ड तैयार करेंगे। उनके परिवार में जाओ, ना जाओ; लेकिन जो स्थापना का कार्य होना है उसके लिए वह निमित्त बनेंगे। .....एडवांस पार्टी का तो अपना कार्य चल रहा है। ....उनका कार्य ही आपके कनेक्शन से चलना है।''** एडवान्स पार्टी में जितने भी स्टुडेण्ट आते हैं उनमें से 95 परसेण्ट स्टुडेण्ट ऐसे होते हैं जो या तो ब्रह्माकुमारी आश्रमों से प्रताड़ित होकर अर्थात् पाण्डवों की तरह निष्कासित होकर आते हैं या तो ईश्वरीय ज्ञान से सम्बन्धित अपनी शंकाओं का समाधान प्राप्त ना होने के कारण आते हैं और यहाँ आकर उनको पूरी संतुष्टि मिलती है और यह तो वैसे ही है जैसे विभीषण राम की सभा में पहुँच गया था। यहाँ पर उन नम्बरवार विभीषणों को राज्याभिषेकार्थ स्वीकार कर लिया जाता है।

सन् 1976 से प्रत्यक्ष हुए परमपिता शिव के इस रथ के द्वारा यह स्पष्ट हो चुका है कि निराकार परमपिता शिव किन मनुष्य-आत्माओं द्वारा स्थापना, विनाश व पालना का कार्य करा रहे हैं अर्थात् ब्रह्मा, शंकर व विष्णु की प्रैक्टिकल भूमिका कौन अदा कर रहे हैं, सारे विश्व के माता-पिता कौन हैं जिनके द्वारा परमपिता शिव सारी दुनिया को अविनाशी सुख-शान्ति का वर्सा देते हैं और जो विश्व-महाराजन श्री नारायण व विश्व-महारानी श्री लक्ष्मी के रूप में इस सृष्टि पर राज्य करेंगे, आने वाली नई दुनिया (पैराडाइज़ या जन्नत) कैसी होगी व उस स्वर्गीय दुनिया के पहले पत्ते अर्थात् श्रीकृष्ण व श्रीराधे कौन बनेंगे। इस प्रकार **'एडवांस ज्ञान'** में हमें यह भी बताया गया है कि किस प्रकार 5000 वर्ष के इस सृष्टि रूपी नाटक की शूटिंग या रिहर्सल इस संगमयुग में होती है, इस मनुष्य-सृष्टि के बीज कौन हैं, संगमयुग में कैसे सभी धर्मों की बीजरूप व आधारमूर्त आत्माएँ परमपिता शिव से असली ज्ञान लेती हैं तथा द्वापरयुग से अपना-2 धर्म स्थापन करती हैं, मनुष्य-आत्माएँ अधिक से अधिक 84 जन्म कैसे लेती हैं तथा इन जन्मों में उनके उत्थान व पतन की नींव संगमयुग में कैसे रखी जाती है। उस शास्त्रीय ज्ञान से भी ऊँचे राजयोग अर्थात् राजाओं का राजा बनाने की शिक्षा, शक्ति व मार्गदर्शन स्वयं परमपिता परमात्मा शिव अब

सम्मुख दे रहे हैं। परमपिता परमात्मा शिव का इस धरती पर आने का मुख्य लक्ष्य ही यह है- विश्व धर्मों की सभी देव आत्माओं को एक सूत्र में बांधकर प्रायः लोप हुए **'आदि सनातन देवी-देवता धर्म'** की स्थापना करना अर्थात् **'मनुष्य से देवता बनाना।' 'नर ऐसे कर्म करे जो नर अर्जुन से नारायण बने और नारी द्रौपदी ऐसे कर्म करे जो लक्ष्मी बने।'** इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दो साधन हैं- **ईश्वरीय ज्ञान व राजयोग।** इस ज्ञान का निःशुल्क एडवांस प्रशिक्षण तात्कालिक कम्पिला स्थित मिनी मधुबन द्वारा दिया जाता है तथा भारतवर्ष में फैले इसके विभिन्न अन्तर्राज्यीय आध्यात्मिक परिवारों तथा गीता-पाठशालाओं द्वारा भी दिया जाता है।

'मुरली' उसे कहते हैं जो दादा लेखराज ब्रह्मा के मुख द्वारा सुप्रीम सोल शिव ने उच्चारी है। दादा लेखराज ब्रह्मा की आत्मा शरीर छोड़ने के बाद **ब्र.कु. हृदय मोहिनी** (गुलज़ार दादी) में प्रवेश करके जो कुछ भी बोलती है वह **'अव्यक्त वाणी'** है। मुरली हमारा पद्य है और अव्यक्त वाणी गद्य है। इनको ही **'श्रीमत'** कहा जाता है। यहाँ श्रीमत के आधार पर ही सारी बातें समझाई जाती हैं। देश-विदेश के ब्रह्माकुमारी आश्रमों से जो ब्रह्माकुमार-कुमारी आते हैं, जिन्होंने मुरली/अव्यक्त वाणी को मान्यता दी है, मुखवंशावली ब्राह्मण बने हैं वही इन बातों को समझ सकते हैं। बाकी देहधारियों के प्रभाव में चलने वाले कुखवंशावली ब्राह्मणों के लिए यह ज्ञान समझ पाना बहुत मुश्किल है। यहाँ पर सुनाए जाने वाले तथ्य वे हैं, जो गीता में पढ़े जाते हैं। जैसे गीता में एक श्लोक है **'गुह्यात गुह्यतरम् ज्ञानम्'** अर्थात् मैं गुह्य-ते-गुह्य राज़ सुनाता हूँ। माना सुप्रीम सोल शिव द्वारा दादा लेखराज ब्रह्मा के माध्यम से माउण्ट आबू में जो ज्ञान सुनाया गया वह गुह्य ज्ञान तो था; लेकिन शिवबाबा द्वारा सुप्रीम टीचर के रूप में उस गुह्य ज्ञान का भी अनोखा स्पष्टीकरण यहाँ कम्पिला में बाबा वीरेन्द्र देव दीक्षित जी द्वारा अब दिया जा रहा है। इसलिए बिना कोई प्रदर्शनी, मेला-सम्मेलन, कॉन्फ्रेन्स आदि एडवर्टाइज़मेण्ट किए तथाकथित ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ स्वतः ही अपने-2 B.k सेण्टर्स छोड़कर कम्पिला आ रहे हैं और यहाँ से जो ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ एडवान्स कोर्स समझकर जाते हैं, उनके ऊपर बी.के. सेण्टर्स के सरपरस्त 'शंकर पार्टी' का लेबल लगाकर उनको सार्वजनिक कहे जाने वाले अपने सेण्टर्स से तुरंत ही निष्कासित कर देते हैं। यहाँ तक कि उनसे बात भी नहीं करते हैं और कभी-2 धक्के मारकर भी निकाल देते हैं या बाहुबल का प्रयोग करते हैं। शिवबाबा ने मुरली में इन धक्का खाए ब्रह्माकुमारों की पहचान **'देशनिकाला पाए महाभारत प्रसिद्ध पांडवों'** के रूप में दी है जिन्होंने लंबे समय तक राजा द्रुपद की नगरी काम्पिल्य नगर में गुप्त वास किया था।

आ.ई.वि.वि., कम्पिला का संचालन सिर्फ श्रीमत के आधार पर ही होता है। यह कोई संस्था नहीं है। यह तो एक बहुत बड़ा ईश्वरीय अलौकिक ब्राह्मण परिवार है, घर-गृहस्थ आश्रम है। इसका प्रमाण माउण्ट आबू से ही छापी गई **अव्यक्त वाणी ता. 22.4.84 पृ.265 आदि** में है, जिसमें बापदादा ने कहा है- **''यह वंडरफुल विश्वविद्यालय है, देखने में घर भी है; लेकिन बाप ही सत शिक्षक है। घर भी है और विद्यालय भी है। इसलिए कई लोग समझ नहीं सकते हैं कि यह घर है या विद्यालय है; लेकिन घर भी है और विद्यालय भी है।''** क्योंकि यहाँ सबसे श्रेष्ठ पाठ अर्थात् सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान और राजयोग सिखाया जाता है और अपने चौरासी जन्मों के पार्ट को पहचानने का ज्ञान दिया जाता है। इसी जन्म में **'नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी'** बनने का लक्ष्य दिया जाता है, जबकि ब्रह्माकुमारी आश्रम में यह लक्ष्य दिया जाता है कि वर्तमान शरीर छोड़कर अगले जन्म में राधे-कृष्ण जैसे प्रिन्स-प्रिन्सेज बनना है। इसके अलावा मुरली में यह भी बताया गया कि - **''यह घर का घर भी है और यूनिवर्सिटी भी है। इसको ही गॉड फादरली वर्ल्ड यूनिवर्सिटी कहा जाता है; क्योंकि सारी दुनिया के मनुष्य मात्र की सद्गति होती है। रियल वर्ल्ड यूनिवर्सिटी यह है। घर का घर भी है, मात-पिता के सम्मुख बैठे हैं। फिर यूनिवर्सिटी भी है, स्प्रिचुअल फादर बैठा हुआ है। यह रूहानी नॉलेज है**

जो रूहानी बाप द्वारा मिलती है। स्प्रिचुअल नॉलेज सिवाय स्प्रिचुअल फादर के और कोई मनुष्य दे नहीं सकते। उनको ही ज्ञान का सागर कहा जाता है।'' (रिवाइज़ मु.ता. 5.9.91 पृ.1 आदि) इस आधार पर ज़्यादातर अर्जुन जैसे गृहस्थी पांडव ही यह ज्ञान धारण करते हैं।

पिछले 4 दशकों से भी अधिक समय से पूरे भारतवर्ष से और विदेश से भी ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ खिंच करके आ.ई.वि.वि., कम्पिला में आ रहे हैं। इधर आकर वे सारे एडवांस नॉलेज को समझते हैं। सात दिन तक सेवाकेंद्र में रहकर रात-दिन अखंड शिविर भट्ठी करने का प्रावधान है। ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा प्रकाशित ज्ञान मुरलियों और अव्यक्त वाणियों में दिए गए इशारों के आधार पर यहाँ आने वाले सभी ब्रह्माकुमार-कुमारी स्वेच्छा से नोटरी स्टाम्प पेपर पर एफीडेविट में निश्चय पत्र लिख-लिखकर देते आए हैं कि यह हमारे जगत्पिता हैं और यह हमारी जगतमाता हैं। इस प्रकार यह राजयोग भट्ठी करने और निश्चय-पत्र देने वालों को प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारी (P.B.K.) कहते हैं। अपनी स्वेच्छा से यह निश्चय-पत्र लिखकर देने के बावजूद भी कई पुराने पी.बी.केज़ इस ईश्वरीय परिवार को छोड़कर चले गए हैं और **कुछ भूतपूर्व पी.बी.केज़ ने या उनके फॉलोअर्स ने उनको 'विष्णु' घोषित भी कर दिया है**, जिनमें अहमदाबाद के दशरथ पटेल भाई, मुम्बई के सतीश मेहता भाई, हैदराबाद के नागराज भाई, बैंगलोर के वत्सला-व्यंकटेश इत्यादि के नाम उल्लेखनीय हैं। इसलिए यहाँ पर कुछ वर्षों से पी.बी.केज़ द्वारा कोर्ट के स्टाम्प पेपर्स पर निश्चय-पत्रों का एफीडेविट फर्रुखाबाद कचहरी में बनवाया जाता है, ताकि कोई भविष्य में यह न कह सके कि हमने निश्चय-पत्र दिया ही नहीं।

माउण्ट आबू में चली रिवाइज़ **मुरली 24.3.92 पृ.3 अंत** में शिवबाबा ने बोला भी है कि **''तुम्हारा परमपिता परमात्मा के साथ क्या सम्बन्ध है? जब तक इस बात का एक्युरेट जवाब नहीं लिखकर दें तब तक बाबा का मिलना ही फालतू है।''** एक्युरेट जवाब का मतलब है वर्तमान समय सुप्रीम सोल शिव ज्योतिर्बिंदु, किस साकार तन में इस सृष्टि पर कार्य कर रहे हैं और उस साकार व्यक्ति का नाम, रूप, देश, काल क्या है- जब तक इस बात का पता ही नहीं तो परमपिता परमात्मा शिव से साकार सम्बन्ध कैसे जोड़ा जा सकता है?

देश-विदेश के ब्रह्माकुमारी आश्रमों से जो ब्रह्माकुमार-कुमारी आते हैं, जिन्होंने मुरली/अव्यक्त वाणी को मान्यता दी है, वह मुखवंशावली ब्राह्मण ही इन बातों को समझ सकते हैं। बाकी देहधारियों के प्रभाव में चलने वाले कुखवंशावली ब्राह्मणों के लिए यह ज्ञान समझ पाना बहुत मुश्किल है। **अ.वा. 18.1.07, पृ.5 मध्य** में अव्यक्त बापदादा ने स्पष्ट कहा हुआ है कि **''मुरली से प्यार अर्थात् मुरलीधर से प्यार। कोई कहे मुरलीधर से तो प्यार है; लेकिन मुरली कभी-2 सुन लेते हैं, बापदादा कहते हैं बापदादा उसका प्यार, प्यार नहीं समझते हैं। प्यार निभाना अलग है, प्यार करना अलग है। जिसको मुरली से प्यार है वह हैं प्यार निभाने वाले और मुरली से प्यार नहीं तो प्यार करने वालों की लिस्ट में हैं, निभाने वाले नहीं।''**

मुरली/अव्यक्त वाणी प्वॉइण्ट्स

1. जीवन कहानी में नाम बदल दिया है। (शिव) बाप के बदले बच्चे (कृष्ण उर्फ़ दादा लेखराज) का नाम डाल दिया है। (मु.ता. 14.7.89 पृ.2 अंत, 3 आदि)
2. शिव के कितने ढेर पुजारी हैं। पूजा करते हैं, फिर मुख से कह देते वह तो पत्थर-भित्तर में है, कण-कण में है। क्या यह जीवन कहानी ठहरी? (मु.ता. 4.9.99 पृ.1 मध्य)
3. ऐसे पत्थरबुद्धि बन जाते हैं जो जिनकी पूजा करते हैं उनकी जीवन कहानी को भी नहीं जानते। बच्चे बाप का जीवन न जानें तो वर्सा कैसे मिले। अभी तुम बच्चे बाप के जीवन को जानते हो। (मु.ता.1.11.2000 पृ.2)

4. तुम रामचन्द्र की भी जीवन कहानी बता सकते हो। (मु.ता.11.2.99 पृ.4 अंत)
5. बाप आते भी हैं मगध देश में, जो कि बहुत गिरा हुआ देश है, बहुत पतित है, खान-पान भी गंदा है। (मु.ता. 4.9.99 पृ.3 मध्य)
6. देहली में राजधानी बननी है और यू.पी. में यादगार बनने हैं। ..... यू.पी. को धर्म युद्ध का खेल दिखाना चाहिए। (अ.वा.24.12.79 पृ.145 अंत, 146 मध्य)
7. ब्रह्मा बाप के प्रत्यक्ष होने की भूमि कलकत्ता है। .....जहाँ से आदि हुई, वहाँ समाप्ति भी हो। (अ.वा.18.1.05 पृ.69 मध्य)

नोट 1:- 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय' का नाम बदलकर 'आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय' नाम डालने के लिए माउण्ट आबू से चलाई गई शिवबाबा की मु.ता.20.3.74, पृ.4 अंत और 19.2.00, पृ.1 में स्पष्ट आदेश इस प्रकार है-''गॉड फादर को स्प्रिचुअल नॉलेजफुल कहा जाता है। तो तुम 'स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी' नाम लिखेंगे। इसमें कोई एतराज़ नहीं उठावेंगे, फिर बोर्ड में भी वह (प्र.ब्र.कु.) अक्षर हटाकर यह स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी लिख देंगे। ट्राय करके देखो, लिखो- 'गॉड फादरली स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी।' इनकी एम-ऑब्जेक्ट यह है। दिन-प्रतिदिन तुम्हारे म्यूज़ियम, चित्रों आदि में भी चेन्ज होती जावेगी, फिर सब सेण्टर्स पर लिखना पड़ेगा- ''गॉड फादरली स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी।''